द्वारा लालन–पालन अन्य जानवरों में भी होता है, लेकिन मानव में स्तनपान की अवधि अन्य जानवरों की तुलना में अधिक दिनों तक होती है। पंक्षियों में भी भरण–पोषण होता है। चिड़ियाँ अपने चोंच में खादय पदार्थ लाकर बच्चों को खिलाते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि लालन–पालन एक जैविक क्रिया है। लेकिन मानव में लालन–पालन हेतु परिवार रूपी संस्था है। माता अपने शिशुओं को आरंभ में स्तनपान कराती है तथा बाद में तरह–तरह के भोजन बनाकर खिलाती है। यह प्रक्रिया तब तक जारी रहती है जब तक वह अपने पैर पर खड़ा नहीं हो जाता है। इस बीच उसे भोजन संबंधी कई तरह के निषेधों का पालन करना पड़ता है तथा सांस्कृतिक प्रथाओं को मानना पड़ता है। इससे स्पष्ट होता है कि लालन–पालन मात्र जैविक अवधारणा नहीं, वरन् सामाजिक–सांस्कृतिक अवधारणा भी है।

4. **सामाजीकरण** : विवाह का एक प्रमुख कार्य अपनी संतानों को सामाजिक बनाना है। विवाह के फलस्वरूप उत्पन्न संतानों को माता–पिता विभिन्न प्रकार के संस्कारों को संपन्न कराके उन्हें सामाजिक प्राणी बनाते हैं। संस्कारों के माध्यम से उन्हें समाजिकता मिलती है तथा अपने अधिकार एवं कर्तव्य का बोध कराया जाता है।

5. **सांस्कृतिक कार्य** : विवाह के माध्यम से कई प्रकार के सांस्कृतिक कार्य किए जाते हैं। कई समाजों में एक पुत्र अपने पिता की मृत्यु पश्चात् सौतेली माता से विवाह रचाता है। इस विवाह में यौन संतुष्टि का कोई स्थान नहीं होता है, वरन् सौतेली माता की देख–रेख एवं उसकी संपत्ति प्राप्त करने के लिए इस प्रथा का पालन किया जाता है। कई समाज में भाभी विवाह के पीछे भी यही सांस्कृतिक मूल्य काम करता है। विवाह के बाद सामाजीकरण प्रक्रिया के माध्यम से सांस्कृतिक परंपराओं एवं रीति–रिवाजों की शिक्षा देते हैं तथा अपनी संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाते है। इस प्रकार विवाह द्वारा सांस्कृतिक मूल्यों की शिक्षा दी जाती है तथा संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित की जाती है।

6. **धार्मिक कार्य** : हिंदू धर्मशास्त्र के अनुसार विवाह के पहले एक पुरूष अर्द्धांग तथा एक स्त्री अर्द्धांगनी है। दोनों को मिल जाने से जीवनपूर्ण होता है। जब स्त्री–पुरूष पति–पत्नी के रूप में दामपत्य सूत्र में बंधते हैं तब उन्हें धर्म का पालन करते हुए अपना घर–गृहस्थी चलाना पड़ता है। पत्नी अर्द्धांगनी के रूप में अपने पति के सामाजिक, धार्मिक कार्यों एवं सुख–दुःख में पूरा साथ देती है। रानी शैव्या अपने पति राजा हरिशचंद्र के सत्य धर्मपालन हेतु अपने–आप को बेच दी थी। हिंदु धर्म के अनुसार कोई भी धार्मिक अनुष्ठान पत्नी के बिना संपन्न नहीं हो सकता है। रामचंद्र को सीता की अनुपस्थिति में सोने की सीता की मूर्ति बनाकर यज्ञ का अनुष्ठान करना पड़ा था। माता–पिता नए वस्त्र धारण कर अपनी संतान के विवाह तथा अन्य संस्कारों के अवसर पर कई प्रकार के धार्मिक अनुष्ठान करते हैं। अपने पति एवं बच्चों के सुख एवं मंगल कामना के लिए स्त्री व्रत रखती है तथा विभिन्न देवी–देवताओं की पूजा करती है।

7. **आर्थिक कार्य** : विवाह द्वारा आर्थिक कार्य संपन्न होता है। पति–पत्नी तथा उनसे उत्पन्न बच्चे परिवार को चलाने में आर्थिक कार्य का निष्पादन करते हैं। उनके बीच